ISSN 2231-2137

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA

A Peer-Reviewed Multi-Disciplinary International Journal
UGC Approved Journal No. 62441, NAAS Score 2018 : 3.23
Impact Factor 2016 : 0.956 (GIF)

आंतरराष्ट्रीय महिला दिन विशेषांक

8 मार्च 2018

"Thus humanity is male and
man defines woman not in
hereself but as relative to him;
she is not regarded as an
authomous being...
She is defines and differentiated
with reference to man and
not he with reference to her;
she is the incidental,
as opposed to the essential.
He is the Subject,
he is the absolute -
she is the other."

-Simon de Beauvoir

प्रा. डॉ. भारती रेवडकर
विशेषांक संपादक

कंटेपररी रिसर्च इन इंडिया (ISSN: 2231-2137)
बहुशाखीय आंतरराष्ट्रीय संशोधन नियतकालिक
युजीसी मान्यताप्राप्त नियतकालिक क्र. 62441

ISSN 2231-2137

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA

A Peer-Reviewed Multi-Disciplinary International Journal
UGC Approved Journal No. 62441, NAAS Score 2018 : 3.23, Impact Factor 2016 : 0.956 (GIF)

129/498, Vasant Vihar, Near Old Pune Naka, Solapur-413001 (Maharashtra, India)
e-mail: researchspectrum@gmail.com, wizcraftpublication@gmail.com, deepak_nanaware2003@yahoo.com
Cell: 09637335551, 07020828552

आंतरराष्ट्रीय महिला दिन विशेषांक

8 मार्च 2018

संपादक
प्रा. डॉ. भारती रेवडकर

CONTENTS

Sr. No.	Title of the Article	Page No.
1	स्त्रीवादी साहित्य प्रवाहाचे बदलते संदर्भ डॉ. सुवर्णा गुंड-चव्हाण	01
2	स्त्री–पुरुष समानता: काही अधोरेखिते डॉ. पौर्णिमा शिरिष कोल्हे	04
3	मराठीतील स्त्रीवादी लेखन प्रा. शुभदा शिवपूजे-उपासे	07
4	आजची स्त्री आणि समाजव्यवस्था प्रा. डॉ. विशाल लिंगायत	11
5	Wretched of The Earth: A Face of Poor Indian Women's Misery Manasi G. Swami	14
6	आदिवासी स्त्रियांच्या समस्या आणि उपाय प्रा. डॉ. माहेश्वरी गावित	16
7	स्त्रीपुरुष सुसंवाद–काळाची गरज प्रा. डॉ. भारती रेवडकर	19
8	हिंदु स्त्रीया विषयी संरक्षणात्मक कायदे ॲड. प्रविणा धनाजी सावंत	23
9	Indian Economist : Bina Agarwal Mr. S. B. Shinde	24
10	हिंदी में महिला आत्मकथा लेखन गिरिश काशिद	27
11	मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी समस्या और नारी सशक्तिकरण के परिपेक्ष्य में डॉ. अर्चना शिवाजीराव कांबळे	31
12	जागतिकीकरण : स्त्री आणि स्त्रीवाद प्राचार्य, डॉ. वेदश्री विजय थिगळे	33
13	महिला विषयी असणारे कायदे प्राचार्य डॉ. एस. एस. गोरे	36
14	रमाई : तमाम आंबेडकरवाद्यांचे मातृकाव्य डॉ. सारीपुत्र तुपेरे	38
15	महिला सबलीकरण: स्त्रियांचे आरोग्य आणि योगशास्त्राची भूमिका श्रीमती विजया द. जगताप	40
16	मिळूनसाऱ्याजणी : एक सामाजिक चळवळ संजीवनी मुळे	42
17	'सिझर कर म्हणतेय माती काव्यसंग्रहातील स्त्री जीवन' संतोष मारुती लोंढे	44
18	स्त्री आणि जागतिकीकरण आरती नंदकुमार कोले	46
19	आजची स्त्री व समाज प्रा. सौ. वासंती कुलकर्णी	49
20	आजची स्त्री आणि समाजव्यवस्था सौ. मैत्रेयी मंदार केसकर	52
21	स्त्री आणि आरोग्य डॉ. गौरी कैवल्य गायकवाड	55

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

हिंदी में महिला आत्मकथा लेखन

गिरिश काशिद, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्रीमान भाऊसाहेब झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी, जिला–सोलापुर

स्त्री मूलतः सर्जक है। महिला लेखन स्त्री अस्मिता की तलाश है। मानवी सभ्यता के विकास में जो रचनात्मकता पाई जाती है उसमें उसका अहं योगदान रहा है। लेकिन दूसरी ओर स्त्री पर हमारी सभ्यता ने कई बंधन डाल दिए और उसकी स्वाभाविक रचनात्मकता का गला घोंट दिया। हिंदी साहित्य के इतिहास में आरंभिक दौर में महिला लेखन का उल्लेख नहीं मिलती। इसका अर्थ यह नहीं कि उस काल में महिला लिखती ही नहीं थी। "इस युग का महिला–लेखन लोक–साहित्य के रूप में था, जिसे खुसरो के उल्लेख से भी सनद प्राप्त है।"[1] हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में मीराबाई को तक पुरूषसत्ता के दबाव को सहना पडा लेकिन उसने इसके प्रति विरोध कर अपनी रचनात्मकता को सिध्द किया। इसी कारण मीराबाई और उनका साहित्य अपनी अलग पहचान रखता है। लेकिन समग्रतः नारी लेखन का कम होना चिंतित करता है। "भारतीय सामाजिक व्यवस्था अधिकांशतः पुरूषप्रधान होने से, अभी कुछ दशक पूर्व तक, साहित्य के विकास में नारी का योगदान स्रष्टा के रूप में कम, प्रेरणा रूप में अधिक रहा है।"[2] आधुनिक काल में नारी अस्मिता के उदय से महिला स्वयं को व्यक्त करने लगी।

महिला लेखन के इतिहास में मीराबाई मील की पत्थर है। आधुनिक काल में नारी शिक्षित हुई और उसकी अभिव्यक्ति सशक्त रूप में सामने आई। इस काल में मध्यवर्ग से कई महिला लेखिकाएँ कई विधाओं में लिखने लगी। वह पुरूषसत्ता का विरोध कर अपनी जमीन तलाशने लगी। महिला लेखन की यह विशेषता है कि यह न केवल आशा का संचार करता है अपितु जीवन का विस्तार भी करता है। नारी लेखन की अपनी पहचान है। समस्या और संदर्भों को स्त्री अपनी दृष्टि से देखती है। "आधुनिक स्त्री के लिए अभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम केवल कला ही नहीं है। अब वह अन्य सृजनात्मक क्रियाशीलताओं में भी अभिनियोजित है, किंतु यह भी सच है कि आधुनिक स्त्री आज भी साहित्य और कला में ही मुक्ति खोजती है। एक साहित्यकार स्त्री पुरूष की दुनिया की परिसीमा पर अवस्थित जगत को एक वैश्विक संदर्भ में ही नहीं देखती बल्कि जगत के प्रति अपना एक विशेष दृष्टिकोण रखती है।"[3]

हिंदी मे नारी लेखन का उद्‌भव अन्य भाषा की तुलना में देर से पाया जाता है। निरक्षरता और पुरूष सत्ता इसके दो प्रमुख कारण माने जा सकते हैं। सामाजिक नवजागरण, शिक्षा, स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता और औद्योगीकरण के कारण स्त्री के जीवन में बदलाव आया और वह स्वयं को व्यक्त करने लगी। वह अपनी वेदना और अपेक्षाओं को लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त करने लगी। इसके परिणामस्वरूप नारी चेतना विकसित हुई। बीसवीं सदी के अंतिम दशक से नारी लेखन में निरंतर बढोतरी हो रही है। इसके चलते स्त्री का स्वानूभूतिजन्य यथार्थ सामने आ रहा है। "आज स्त्री जो लिख रही है, वह एक सामाजिक अध्ययन भी है। वह अपने समाज को समझना चाहती है। वह बंधनकारी कारकों की तलाश करना चाहती है।"[4] अर्थात नारी लेखन परंपरागत मान्यता और समाज को बदलना चाहता है। आज का महिला लेखन बहुआयामी बनता जा रहा है। समकालीन स्त्री लेखन में विविधता पाई जाती है। वह व्यापक जीवन जगत से जुड रहा है। वह कथात्मक साहित्य के साथ ही कथेतर में भी विस्तार पा रहा है। बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में महिला लेखन में सार्थक विकास हुआ है। स्त्री अब अपने स्व का शोध भी ले रही है। नारी लेखन अब भारतीय नारी विमर्श को उजागर कर रहा है। "समकालीनता के संदर्भ में भारतीय महिलाओं की जो सांस्कृतिक दृष्टि है वह एक साथ परंपरागत एवं नवीन मूल्यों के समन्वय से विकसित होती है।"[5]

हिंदी में चंद्रकिरण सौनरेक्सा, शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा, मृणाल पांडे, मुदुला गर्ग, चंद्रकांता, ममता कालिया, प्रभा खेतान, चित्रा मुदगल, राजी सेठ, सूर्यबाला, मैत्रेयी पुष्पा, नमिता सिंह, सूर्यबाला, अलका सरावगी, नासिरा शर्मा, अनामिका, जया जादवानी, गीतांजली श्री आदि लेखिकाओं ने उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज की है। ये लेखिकाएँ "स्त्रियों की एक नई दुनिया लेकर हिंदी समाज के सामने आती है जिसमें सामाजिक रूढिवादी बंधनों से मुक्ति की छटपटाहट तो है ही, साथ–ही–साथ एक ऐसी ऐतिहासिक दुनिया रचने की आकांक्षा है, जहाँ पर स्त्रियों के अधिकार अधिक नहीं तो कम–से–कम पुरूषों के बराबर तो होने ही चाहिए।"[6] अर्थात नारी लेखन अस्मिता के साथ अधिकार की मॉग कर

यह भी सही है कि सभी आरोप निरर्थक नहीं है। महिला आत्मकथाओं में कुछ कमियाँ है। समय के चलते यह कम होगी। और कई संदर्भ इनके माध्यम से सामने आयेंगे। पुरूष आत्मकथाओं में भी तो कमियाँ है ही। हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथा से सामाजिक संरचना की जड़ता दृष्टिगोचर होती है।

भारतीय साहित्य या हिंदी भाषा में अन्य विधाओं की तुलना में आत्मकथा विधा का विकास काफी विलंब से मिलता है। भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश इसका कारण रहा है। हमारे यहाँ व्यक्ति का अपने बारे में कहना आत्मप्रौढी माना जाता था। अर्थात इसके कारण हमारे सामाजिक संदर्भ में निहित है। हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में नवजागरण का दौर आया। इससे समाज और साहित्य में भी परिवर्तन हुआ।

स्वतंत्रतापूर्व काल में महापुरूष या असाधारण कार्य करनेवाले व्यक्ति ही आत्मकथा लिखते पाए जाते हैं लेकिन स्वातंत्र्योत्तर काल में सामान्य लोग भी आत्मकथा लिखते नजर आते हैं। इससे आत्मकथा का स्वरूप अधिक प्रजातांत्रिक होता गया है। हिंदी आत्मकथा के विकास में हिंदी साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 1975 के बाद हिंदी में जो आत्मकथाएँ लिखी गई उनमें साहित्यकारों की आत्मकथाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। इन आत्मकथाओं में साहित्यिक परिवेश भी उजागर हुआ है। इनमें स्त्री के जीवन का व्यापक रूप और अर्थ खोजने की दृष्टि पाई जाती है। इन आत्मकथाओं की भाषा भी उल्लेखनीय है। भारतीय साहित्य में आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण के चलते विशिष्ट वैयक्तिकता को व्यक्त करनेवाली आत्मकथाएँ लिखी जाने लगी है। हिंदी महिला आत्मकथा का आरंभिक चरण यद्यपि उतना सशक्त नहीं है लेकिन वह क्रमशः प्रगल्भ बनता जा रहा है। इसमें कई संभावनाएँ नजर आती है।

संदर्भ संकेत

1. डॉ. सुमन राजे, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, पृ. 198
2. www.srijangatha.com
3. सीमोन द बोउवार, स्त्री उपेक्षिता, पृ. 369
4. सं. कल्पना वर्मा, स्त्री विमर्शः विविध पहलू, पृ. 86 (बिगबैंग थ्योरी और महिला लेखन, डॉ. आशा उपाध्याय)
5. डॉ. के. एम.शर्मा, स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य, पृ.160
6. सं. अरविंद जैन,प्रो. कमलाप्रसाद, स्त्रीः मुक्ति का सपना, पृ. 475
7. अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्वर, पृ. 89
8. वीणा आलासे, तीन आत्मकथा, प्रास्ताविक
9. पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ. 57
10. डॉ.सरजूप्रसाद मिश्र, हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ, आमुख
11. प्रा.नागनाथ कोत्तापल्ले, साहित्य आणि समाज, पृ. 195
    (स्त्रीवादी दृष्टिकोनातून स्त्रीसाहित्याचे विहंगमावलोकन, डॉ. विलास खोले)
12. 23.सं. डॉ. मंदा खांडगे, भारतीय भाषातील स्त्रीसाहित्याचा मागोवा–1, पृ. 77
    (हिंदी ललितेतर गद्य, डॉ. जया परांजपे)
13. अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्त्री–स्वर, पृ.180
14. सं. राजेंद्र यादव, अर्चना वर्मा, देहरी भई विदेस, पृ.19
15. सुधा अरोडा, एक औरत की नोटबुक, पृ.155

ISSN 2231-2137

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA

A Peer-Reviewed Multi-Disciplinary International Journal
UGC Approved Journal No. 62441, NAAS Score 2018 : 3.23
Impact Factor 2016 : 0.956 (GIF)

आंतरराष्ट्रीय महिला दिन विशेषांक

129/498, Vasant Vihar, Near Old Pune Naka, Solapur, MH - 413001
(9637335551 / 7020828552)
www.contemporaryresearchindia.net

ISSN 2231-2137